647510 **BA4HinFO1010** **Seat No :_____**

B.A. Semester - 4 (*CBCS*) Examination

March/April-2023 [OLD COURSE]

FOUNDATION : HINDI DHANUSHBHANG EVAM VYAKRAN(FOUNDATION)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न. १ किशोर काबरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. १ 'धनुष – भंग' खंडकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए ।

प्रश्न. २ भावपक्ष एवं कलापक्ष की द्रष्टि से 'धनुष – भंग' खंडकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. २ 'धनुष – भंग' खंडकाव्य के आधार पर सीता का चरित्र- चित्रण कीजिए ।

प्रश्न. ३ 'धनुष – भंग' खंडकाव्य में इतिहास एवं कल्पना का समन्वय हुआ है -सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न. ३ 'धनुष – भंग' खंडकाव्य में निरूपित आधुनिक समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न. ४ टिप्पणियाँ लिखिए (किन्ही दो) (१४)

(१) 'धनुष – भंग' खंडकाव्य का उद्देश्य

(२) 'धनुष – भंग' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता

(३) 'धनुष – भंग' खंडकाव्य की भाषा – शैली

(४) 'धनुष – भंग' खंडकाव्य में प्रकृत चित्रण

प्रश्न. ५ (अ) आपकी कॉलेज में 26 जनवरी 2023 गणतंत्र दिन मनाया गया इसके बारे में एक प्रेसनोट तैयार कीजिए । (०७)

अथवा

(अ) भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध के संदर्भ में प्रेसनोट तैयार कीजिए ।

(ब) हिन्दी में अनुवाद कीजिए । (०७)

મનુષ્ય સ્વતંત્ર વિચારયુક્ત પ્રાણી હોવા છતાં પણ પરિસ્થિતિનો દાસ છે અને આ પરિસ્થિતિચક્ર શું છે? તે પુર્વ જન્મનાં કર્મના ફળનું વિધાન છે. મનુષ્યનો વિજય ત્યાં જ શક્ય છે, જ્યાં તે પરિસ્થિતિઓના ચક્રમાં ચડીને એના સાથે ચક્કર ન ખાય, પરંતુ પોતાના કર્તવ્યા કર્તવ્યનો વિચાર કરીને તેના પર વિજય મેળવે.

અથવા

(ब) गुजराती में अनुवाद कीजिए :

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को जीवन से पुर्णतया तैयार करना है । आज की शिक्षा तो पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करके ही अपने कर्तव्य की इतिश्री (सबकुछ सफलता) समझती है । शिक्षार्थी को जीवन-जगत से न परिचित किया जाता है और न उसे वस्तविक समस्या को सुलझाने के योग्य बनाया जाता है । आज की शिक्षा सचमुच अव्यवहारिक है । पुस्तकीय ज्ञान सम्बन्धी बातों के अतिरिक्त वह कुछ नहीं जानता । इसके फलस्वरूप राष्ट्र की अपार क्षति होती है । जब नवयुवक वास्तविक जीवन में प्रविष्ट होता है, तब उसकी दशा एक साधनहीन यात्री जैसी हो जाती है । उस समय वह अपने को अपार संसार – सागर के किनारे पाता है । एसी दशा में वह कर्तव्यविमूढ होकर अपने निरर्थक जीवन को कोसता है ।

****